भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
IIT INDIAN INSTITUTE OF TECHNOLOGY
BANARAS HINDU UNIVERSITY

☎ 0542 2366676: e-mail : pro.ppc@itbhu.ac.in

कुलसचिव कार्यालय
(प्रेस एवं प्रचार प्रकोष्ठ)
दैनिक जागरण
Office of the Registrar
(Press & Publicity Cell)
दिनांक : 11.10.2019

बारिश की बूंदें सहेजेगी यह ईंट

मुहम्मद रईस ● वाराणसी

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, आइआइटी), बीएचयू, वाराणसी ने बारिश की बूंदों को सहेजने का अब बेहतरीन उपाय ढूंढ निकाला है। गलियों में बिछाई जा सकने वाली ये ईंट आवागमन में सुविधाजनक होने के साथ ही बारिश की बूंदें भी सहेजेगी।

वर्षा का सड़कों-गलियों से होता हुआ यूं ही व्यर्थ बह जाता है। इन ईंटों से अब इस समस्या से निजात मिलेगा। भूजल स्तर बढ़ाने में इसे अहम माना जा रहा है। सड़कों के मलबे से बनने वाली इस ईंट को पोरस पेवर ब्लॉक का नाम दिया गया है। बनारस हिंदू विवि (बीएचयू) स्थित आइआइटी के शोधार्थियों का कहना है कि कंक्रीट के जंगल में परिवर्तित हो चुके महानगरों के लिए तो यह ईंट वरदान साबित होगी। संस्थान के सिविल इंजीनियरिंग विभाग के डॉ. निखिल साबू के निर्देशन में शोध छात्रों ने खराब सड़कों से निकले मलबे, सीमेंट और सुपर प्लास्टिसर्जर लिक्विड का प्रयोग कर पोरस पेवर ब्लॉक (ऐसा ब्लाक जिससे पानी छन जाता हो) तैयार किया है। हालांकि पोरस ब्लॉक पहले भी

वाराणसी : पोरस पेवर ब्लॉक के साथ आइआइटी बीएचयू के छात्र ● जागरण

पोरस पेवर ब्लॉक ● जागरण

तैयार किए जा चुके हैं, लेकिन पेवमेंट मैटेरियल यानी सड़कों की खराब गिट्टियों का पहली बार इस तरह प्रयोग किया गया है। इन ईंटों से प्राकृतिक संसाधन की बर्बादी काफी हद तक रोकी जा सकेगी। डॉ. निखिल ने बताया कि पहले गिट्टियों की सतह, उसके ऊपर बालू की परत बिछाने के बाद ब्लॉक को लगाना होगा। इसका स्वरूप थोड़ा ढालू बनाने पर बारिश का पानीछनकर एक किनारे आ जाएगा। नालियों से इस पानी को कहीं भी संचित किया जा सकता है। सिंचाई में प्रयोग के साथ ही ट्रीटमेंट के बाद इसका प्रयोग पेयजल के रूप में भी किया जा सकेगा। गलियों, पाथवे, फुटपाथ के अलावा शोधार्थी अब सड़कों में प्रयोग के लिए ब्लॉक की मजबूती बढ़ाने की दिशा में काम कर रहे हैं।

इसके तहत अलग-अलग तरह के 500 ब्लॉक तैयार किए जाएंगे। इससे सड़कों के लिहाज से भार वहन करने वाले ब्लॉक के सही फार्मूले की पहचान होगी। राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण, वाराणसी ने इसके लिए करीब 2000 किलोग्राम पेवमेंट मैटेरियल विभाग को उपलब्ध कराया है।

खोज

- आइआइटी बीएचयू ने बनाया पोरस पेवर ब्लॉक, सड़कों पर बहने वाला पानी पहुंचेगा जमीन में
- फुटपाथ, पार्किंग, फ्लोर और गलियों में हो सकेगा उपयोग

जल संरक्षण

वर्षाजल संचयन में बेहद कारगर

आइआइटी बीएचयू के मुताबिक सड़कों-गलियों में इसे बिछाकर वर्षा के बूंदों को सहेजा जा सकेगा। यही नहीं इन ईंटों को यदि उद्यानों, बाजारों, सोसाइटी, सड़कों के फुटपाथ और गलियों में बिछाया जाए तो यह रेन वाटर हार्वेस्टिंग के तौर पर काम करेंगी। इससे वर्षा जल का बहुत बड़ा हिस्सा संचित किया जा सकता है।